International Journal of Home Science 2020; 6(2): 258-259

ISSN: 2395-7476
IJHS 2020; 6(2): 258-259
© 2020 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 16-03-2020
Accepted: 21-04-2020

ज्योत्सना सिंह
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला स्नातकोत्तर महिलाविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

डा0 सारिका जायसवाल
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला स्नातकोत्तर महिलाविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

Corresponding Author:
ज्योत्सना सिंह
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला स्नातकोत्तर महिलाविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

किशोरियों में स्वरोजगार के माध्यम से उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के प्रयास

ज्योत्सना सिंह एवं डा0 सारिका जायसवाल

Abstract
उद्यमशीलता जीवन का एक आवश्यक अंग है। यह मानव जीवन का एक आधारभूत दर्शन एवं स्वभाव है जो व्यक्ति को स्वथावतः कर्म करने हेतु प्रेरित करता है। यह मात्र धन सृजन का एक तरका ही नहीं है वरन् व्यक्तित्व विकास एवं समग्र सामाजिक आर्थिक विकास का एक महामंत्र है जो आत्मनिर्भरता एवं आत्मसहायता के साथ बेहतर रूप से मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति का मार्ग प्रषस्त करता है तथा मानवीय प्रेरणाओं की अभिव्यक्ति का एक सषक्त मार्ग प्रदान करता है। वस्तुतः उद्यमषीलता एक तकनीक, कौषल एवं चिन्तन के साथ एक जीवन पद्धति भी है।

Keywords: स्वरोजगार, आत्मनिर्भर

Introduction
किसी भी अर्थव्यवस्था में साहसी या उद्यमी वह व्यक्ति है जो किसी भी व्यवसाय में नई वस्तु, नई किस्म, नई उत्पादन प्रणाली, नई तकनीकि, नये अवसर व नये बाजार आदि को प्रस्तुत कर उनसे यथासम्भव व्यावसायिक सृजनशीलता व रचनात्मक आदि उसकी नवकरण की क्षमता व प्रवृत्ति की द्योतक है। यही उद्यमिता की आधुनिक व मौलिक अवधारणा मानी गयी है। उद्यमिता के लिए प्रबन्ध कौशल की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उद्यमी वर्ग में प्रबन्धीकीय योग्यता व क्षमता का होना आवष्यक है। उद्यमियों द्वारा अपनी प्रबन्धकीय क्षमताओं, योग्यताओं का कार्यों के आधार पर ही परियोजना बनाने, निर्माण कार्य करवाने, संसाधनों को प्राप्त कर उसका उपयोगिता करने, जोखिम उठाने व उपक्रम विस्तार सम्बन्धी कार्य करना सम्भव होता है। उद्यमिता की प्रकृति किसी भी देश की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक वातावरण से प्रभावित होती है। इस प्रकार के वातावरण से मनुष्य के विचारों को नयी दिषायें मिलती है और जिस देश में ये वातावरण व्यवसाय के अनुकूल होते हैं वहां उद्यमिता का विकास उच्च स्तर पर होता है।

उद्देष्य
1. किशोरियों में स्वरोजगार हेतु गृह सज्जा के लिए प्लास्टिक के मैट से विभिन्न वस्तुओं का निर्माण करना।
2. किशोरियों में स्वराजगार के माध्यम से हस्त निर्मित शिल्पकारी द्वारा स्वयं की योग्यता का विकास कर उद्यमिता के द्वारा आत्मनिर्भर बनाना।

अध्ययन पद्धति
यह अध्ययन उत्तर प्रदेष के गोरखपुर जिले में किया गया है तथा कुल 50 किषोरियों का चयन किया गया है जिनकी उम्र 19–20 वर्ष है जो गोरखपुर जिले के 65 वार्ड में से चुनी गयी है। इस अध्ययन में श्जश्जमेज और मध्यमान निकाला गया है।

परिणाम
किशोरियों में स्वरोजगार के प्रति उन्हें जागरूक करना और आत्मनिर्भर बनाने के लिए विभिन्न ट्रेडों का इस्तेमाल किया गया जैसे पर्स, टोकरी और प्लास्टिक मैट तैयार करना जिसको बनाने के लिए स्थानीय बाजार में कच्चा माल आसानी से मिल सके।

तालिका 1: डलिया के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण संख्या=50

	सर्वोत्तम	मध्यम	ठीक
मैटेरियल	47 (94.0)	3 (6.0)	–
कलर	47 (94.0)	3 (6.0)	–
डिजाइन	48 (96.0)	2 (4.0)	–

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि डलिया के मैटेरियल के संदर्भ में 94.0 प्रतिषत किशोरियों ने सर्वोत्तम प्राथमिकता दर्शायी तथा 6.0 प्रतिशत किशोरियों ने मध्यम प्राथमिता दी है। डलिया के कलर के संदर्भ में 94.0 प्रतिशत किशोरियों ने उच्च प्राथमिता दर्षायी तथा 6.0 प्रतिशत किशोरियों ने मध्यम प्राथमिकता दी है।

डलिया के डिजाइन के संदर्भ में 96.0 प्रतिशत किशोरियों ने उच्च प्राथमिता दर्शायी तथा 4.0 प्रतिशत किशोरियों ने मध्यम प्राथमिकता दी है।

तालिका 2: पर्स के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण संख्या=50

	सर्वोत्तम	मध्यम	ठीक
मैटेरियल	46 (92.0)	4 (8.0)	–
कलर	48 (96.0)	2 (4.0)	–
डिजाइन	49 (98.0)	1 (2.0)	–

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि पर्स के मैटेरियल के संदर्भ में 92.0 प्रतिशत किशोरियों ने सर्वोच्च प्राथमिकता दर्शायी तथा 8.0 प्रतिशत किशोरियों ने मध्यम प्राथमिता दी है। पर्स के कलर के संदर्भ में 96.0 प्रतिषत किशोरियों ने उच्च प्राथमिता दर्शायी तथा 4. 0 प्रतिशत किशोरियों ने मध्यम प्राथमिकता दी है। पर्स के डिजाइन के संदर्भ में 98.0 प्रतिषत किशोरियों ने उच्च प्राथमिता दर्षायी तथा 2.0 प्रतिषत किशोरियों ने मध्यम प्राथमिकता दी है।

तालिका 3: वाल हैंगिग के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण संख्या=50

	सर्वोत्तम	मध्यम	ठीक
मैटेरियल	38 (76.0)	12 (24.0)	–
कलर	41 (82.0)	9 (18.0)	–
डिजाइन	45 (90.0)	5 (10.0)	–

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि वाल हैंगिग के मैटेरियल के संदर्भ में 76.0 प्रतिशत किशोरियों ने उच्च प्राथमिकता दर्शायी तथा 24.0 प्रतिशत किशोरियों ने मध्यम प्राथमिता दी है। वाल हैंगिग के कलर के संदर्भ में 82.0 प्रतिषत किशोरियों ने उच्च प्राथमिता दर्षायी तथा 18.0 प्रतिषत किशोरियों ने मध्यम प्राथमिकता दी है। वाल हैंगिग के डिजाइन के संदर्भ में 90.0 प्रतिशत किशोरियों ने उच्च प्राथमिता दर्शायी तथा 10.0 प्रतिशत किशोरियों ने मध्यम प्राथमिकता दी है।

तालिका 4: प्लास्टिक के मैट से निर्मित मैटेरियल के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण संख्या=50

	सर्वोत्तम	मध्यम	ठीक
प्लास्टिक मैट से निर्मित डलिया	47 (94.0)	3 (6.0)	–
प्लास्टिक मैट से निर्मित बोर्ड	47 (94.0)	3 (6.0)	–
प्लास्टिक मैट से निर्मित गेट	50 (100.0)	–	–
प्लास्टिक मैट से निर्मित पर्स	46 (92.0)	4 (8.0)	–
प्लास्टिक मैट से निर्मित वाल हैंगिग	38 (76.0)	12 (24.0)	–

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि अधिकांशतः 94.0 प्रतिशत किशोरियों ने हस्त शिल्पकारी प्लास्टिक के मैट के द्वारा निर्मित डलिया के मैटेरियल के संदर्भ में सर्वोत्तम प्राथमिकता दी है क्योंकि आधुनिकीकरण युग में सभी वर्ग के लोग अपने घर की गृह–सज्जा सामग्री पर विशेष ध्यान देते हैं। तालिका द्वारा यह भी स्पष्ट होता है कि 6.0 प्रतिशत किशोरियों में जागरूकता का अभाव पाया गया है। प्लास्टिक के मैट से निर्मित बोर्ड के मैटेरियल के संदर्भ में 94.0 प्रतिशत किशोरियों ने सर्वोत्तम प्राथमिकता दी है क्योंकि आज के आधुनिक युग में लोग भिन्न–भिन्न प्रकार से अपने घरों को सुंदर एवं सजावटी बनाना चाहते हैं। तालिका द्वारा यह भी स्पष्ट होता है कि 6.0 प्रतिषत किशोरियों में ज्ञान का अभाव है।

निष्कर्ष

किशोरियों में शुरू से ही स्वरोजगार की तरफ प्रेरित करने के लिए उन्हें आत्मनिर्भर बनाना बहुत जरूरी है जिससे वह किसी पर भी निर्भर न हों और उनकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी हो सके।

सुझाव

स्वरोजगार की तरफ प्रेरित करने के लिए उन्हें ऐसे ट्रेडों का प्रशिक्षण देना चाहिए जिससे उनमें कौशल विकास (Skill development) हो और वह कोई उद्योग लगा सकें।

संदर्भ

1. अग्रवाल, प्रवीण (2005). ''उद्यमिता के मूलाधार'' नवीनतम् संस्करण, पृश्ठ संख्या 10–15, प्रकाषक साहित्य भवन पब्लिकेषन, आगरा।
2. अग्रवाल, आर0सी0 (2007). उद्यमिता नवीनतम् संस्करण, पृश्ठ संख्या 11–15, प्रकाषक साहित्य भवन पब्लिकेषन आगरा।
3. सिंह, संतराम (2007) ''भारत में उद्यमिता विकास'' नवीनतम् संस्करण, पृश्ठ संख्या 10–11 प्रकाषक हिमालय पब्लिषिंग हाऊस, मुम्बई।